अँधेरे पाख का चाँद

केदारनाथ सिंह

जैसे जेल में लालटेन
चाँद उसी तरह
एक पेड़ की नंगी डाल से झूमता हुआ
और हम
यानी पृथ्वी के सारे के सारे क़ैदी खुश
कि चलो कुछ तो है
जिसमें हम देख सकते हैं
एक-धुसरे का चेहरा !

केदारनाथ सिंह, **प्रतिनिध कविताएँ**
दिल्ली, राजकमल पेपरबैक्स 1985 (1993):115